RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 41 अंक 16 हल्द्वानी सम्वत् 2082 सोमवार 22 सितम्बर 2025 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

सिनला दर्रा
छाया- केशव भट्ट

हिमालय की सुरक्षा के लिये इसपर बयानबाजी से ज्यादा संवारना जरूरी है और मौसम भी चेता रहा है

धापा-मिलम मोटर मार्ग के खराब हाल पर फूटा गुस्सा, ज्ञापन सौंपा

कार्यालय प्रतिनिधि

'हिमालय बचाओ' के नारे के साथ इस बार भी चारों ओर से बयानों की झड़ी लग चुकी है। हिमायल को लेकर सुन्दर व्याख्यान हो चुके हैं और प्रतिभाओं का सम्मान भी हुआ है। बहुत अच्छी बात है कि हिमालय को लेकर चौकन्ने होने वालों को प्रोत्साहित किया जाए लेकिन सच्चाई को जानना जरूरी है। हिमालय की सुरक्षा के लिये इसपर बयानबाजी से ज्यादा इसे संवारना जरूरी है। बदलते मौसम ने भी सबको चेता दिया है। मौसम का मिजाज बता रहा है कि पिछले वर्षों से जाड़ा, गर्मी, बरसात की परिक्रमा अपनी जगह है किन्तु इसके अनुपात में अन्तर आ चुका है। गर्मी के दिनों में भीषण गर्मी और वर्षात में समय पर न बरसना और फिर मूसलाधार होना। इसी प्रकार जाड़ों के सीजन में बदलाव। प्रकृति के साथ छेड़छाड़ के अलावा बयानों का जोर हिमालय के साथ मजाक है। ऐसा मजाक विनाशकारी ही होता है। प्रकृति के संरक्षण के अलावा हिमालय की गोद में बसे ग्रामों को खुशहाल रखने की दिशा में कार्य जरूरी हैं। आधुनिक समय में विकास की गति देखते हुए सीमान्त क्षेत्रों में सुविधाएं भी मुहैया होनी चाहिये ताकि दूरस्थ बसे ग्राम एक प्रहरी की तरह हिमालय का संरक्षण करें। 'हिमालय बचाओ' के नारे बीच ही मल्ला जोहार विकास समिति ने खस्ताहाल धापा-मिलम सड़क का मामला उठाया है। एसडीएम के द्वारा केन्द्रीय गृह मंत्रालय को ज्ञापन भेजा है। (शेष अन्तिम पृष्ठ पर)

भारत के मीलपत्थर

नियमित भाषाशास्त्र के प्राचीनतम प्रणेता-यस्क

सूर्यकान्त बाली

अगर कोई भाषा दुरूह न ह हो गई हो, उसमें लिखा साहित्य आसानी से समझ में आने लायक न रह गया हो तो क्या उस भाषा और उसके साहित्य को समझने समझाने के लिए विशेष प्रयास करना पड़ता है? भाषा विज्ञान का नियम है कि केवल उसी भाषा को समझने के लिए नियमों की जरूरत पड़ती है, व्याकरण की जरूरत पड़ती है, जिसे आम बोलचाल की भाषा रूप में समझना हमारे लिए आसान न रहा गया हो। अगर महाभारत के समय तक आते-आते वैदिक भाषा कठिन हो गई थी, उसे और उसमें लिखे मंत्रों को समझने के लिए आचार्य यस्क को 'निरुक्त' नाम से एक किताब लिखनी पड़ी, तो इसका मतलब साफ है कि तब तक वैदिक भाषा आम लोगों से पूरी तरह दूर हो चुकी थी और लोगों के बीच रोजमर्रा उसी संस्कृत का प्रयोग होता था, जिसमें वेदव्यास ने महाभारत नामक प्रबन्ध काव्य लिखा था। वैदिक संस्कृत से अलग लोगों के बीच संस्कृत का यह नया रूप, अर्थात् लौकिक रूप महाभारत से एक हजार साल पहले हुए वाल्मीकि के समय से ही चलन में आ चुका था और वाल्मीकि ने आदिकाव्य रामायण इसी नई संस्कृत में लिखा था।

अगर यस्क ने अपना महत्वपूर्ण ग्रन्थ निरुक्त न लिखा होता या यस्क का निरुक्त ग्रन्थ अपने से पहले लिखे करीब बारह निरुक्त ग्रन्थों की तरह लुप्त हो चुका होता, तो देश के भाषाई विकास के महत्वपूर्ण पड़ज्ञवों से हमारा परिचय नहीं हो पाता। इस महत्वपूर्ण आचार्य और उनके महत्वपूर्ण ग्रन्थ के बारे में हम अधिक जानकारी पाएँ, इससे पहले अतिसंक्षेप में एक छोटी-सी बात जान लेना रोचक रहेगा।

हर भाषा की तरह संस्कृत में भी कुछ शब्द ऐसे हैं, जिनका प्रयोग सिर्फ भाषाई सौन्दर्य के लिए होता है, या काव्य में पूरक यानी फिलर के रूप में होता है। अंग्रेजी के आईमीन, यू सी आदि की तरह संस्कृत में खलु, ननु, नूनम्, वै जैसे शब्द इसी श्रेणी के हैं। इस तरह के शब्दों की मदद से हम एक ही तरह के शब्दों की मदद से कह सकते हैं। मसलन कहीं कहा गया है कि 'इति यस्क' अर्थात् यस्क ने ऐसा कहा है। पूरक या सौन्दर्यवाची शब्द का प्रयोग करते हुए वही बात इस तरह से भी कही गई है- इति वै यस्कः, इसका अर्थ वही है कि ऐसा यस्क ने कहा है और वै का प्रयोग महज भाषा को ज्यादा सुन्दर बनाने के लिए किया गया है। अन्यथा 'इति यस्कः' या 'इति वै स्यकः' में कोई फर्क नहीं है। पर हमारे देश की हर चीज में भ्रान्ति पैदा करने में सिद्धहस्त कुछ पश्चिमी विद्वानों ने कह डाला कि निरुक्त नामक ग्रन्थ के लेखक के दो नाम मिलते हैं- यस्क और वैस्यक। है न मजेदार? पश्चिमी विद्वानों ने हमारे बारे में भ्रान्तियाँ ऐसे ही फैलाई हैं।

यस्क का महत्व चूँकि निरुक्त के कारण है इसलिए पहले निरुक्त के बारे में जान लिया जाए। निरुक्त शब्द शब्दों की सहायता से बना है- निर् उक्ता। अर्थ है- निर् यानी पूरी तरह से उक्त यानी कहा गया। निरुक्त का सम्बन्ध चूँकि वैदिक भाषा से है, इसलिए वैदिक भाषा के सन्दर्भ में इसका अर्थ है वह किताब, जिसमें इस भाषा के शब्दों को पूरी तरह से समझा दिया गया है। कैसे समझा दिया है? निर्वचन के द्वारा और हमारे देश की ज्ञानराशि को यस्क का यही सबसे बड़ा योगदान है। चूँकि यस्क के समय तक वैदिक भाषा दुरुह हो चुकी थी, इसलिए उसके शब्दों को समझाने का यस्क ने एक नया तरीका निकाला है।

यस्क क्या करते हैं कि वे किसी एक वैदिक मन्त्र को उठा लेते हैं और उसका अर्थ करना शुरू कर देते हैं। अर्थ करने के दौरान जरूरी शब्दों को उठाते जाते है। और उनका अर्थ इस तरह से समझाते है। कि पढ़ने वाले को शब्द के साथ उसके अर्थ का जुड़ाव पूरी तरह समझ में आ जाए।

किसी शब्द का अर्थ जानने का इससे अच्छा तरीका क्या होगा कि उसका प्रयोग समझा दिया जाए। आप चाहें तो उसे आज की शिक्षा प्रणाली का डायरेक्ट मैथड जैसा माना सकते हैं। मसलन एक शब्द है, राजा। यस्क उसका अर्थ इस तरह समझाएँगे, राजा राजतेः अर्थात् राजा वह है जो विराजित हो, चमक-दमक रहा हो। देवता का अर्थ यस्क इस तरह समझाएँगे- देवो दानाद् वा, दीपनद् वा, द्योतनाद् वा द्युस्थानीयो भवतीति वा, अर्थात् देवता वह है जो लोगों को कुछ दे, प्रदीप्त हो, दीप्तिमान हो या द्युलोक वासी हो। प्रचलित अर्थ या अर्थों के आधार पर वैदिक शब्दों को समझाने वाले यस्क ने एक खास सिद्धान्त यह बनाया था कि- 'अर्थनित्यः परीक्षेत' अर्थात शब्दों को हमेशा अर्थ के सहारे समझने की कोशिश करनी चाहिए। भाषा में दो मूलतत्व होते हैं- शब्दों की ध्वनियाँ और शब्दों के अर्थ। संस्कृत व्याकरण की पुस्तकें ध्वनि के आधार पर शब्दों की चीरफाड़ करती हैं, जबकि निरुक्त में अर्थ के आधार पर शब्दों को समझा जाता है। भाषा विज्ञान को यस्क की यह अद्भुत देन है और अपनी इस अद्भुत देन को यस्क ने जितने भाषाई आयामों

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

जब जनता भड़क जाती है

विश्व का इतिहास इस प्रकार की घटनाओं से भरा पड़ा है जब जनता भड़क जाती है तो वैभवशाली राज्य में तक उलट-पुलट होने लगती है और राजा को जन आक्रोश के आगे झुकना पड़ता है। वर्तमान की दुनिया में कई जगह इस तरह की घटनाएं दिखाई दे रही हैं। सबसे ताजा और बड़ी घटना नेपाल देश की है। जहाँ नाराज लोगों के भय से प्रधानमंत्री ने इस्तीफा देते हुए गुप्त स्थान में शरण ले ली, विधायक-मंत्री अपने घर छोड़कर भाग गये, संसद भवन में भारी तोड़फोड़ कर दी गई।

नेपाल में हुई हिंसा के पीछे कई कारण बताये जा रहे हैं। सबसे पहले तो सोशल मीडिया में पाबंदी के बाद नाराजी होने लगी थी लेकिन केवल यही एकमात्र कारण नहीं है। सामाजिक असमानता लगातार बढ़ते रहना और पद पा चुके नेताओं की मनमानी से नाराज जनता भड़क उठी थी। राजतन्त्र के समय एक अनुशासन नेपाल में हुआ करता था और धार्मिक व परम्परागत व्यवस्थाओं के अनुसार देश की व्यवस्था संचालित थी लेकिन जैसे ही इसमें लोकतन्त्र का बाना बुना जाने लगा इस पूरे बाने के ताने में पद पाने सुर लगने लगे और प्रधानमंत्री के रूप में नेता विराजमान हुए लेकिन नेपाल झुलसता रहा है।

इस हिंसा के बाद जिस प्रकार के हालात से नेपाल गुजर रहा है उसे देख कर दुनिया के दूसरे देश अपने तरह से इसका आंकलन कर रहे हैं और नेपाल के आस-पास के देश ज्यादा चौकस हैं। क्योंकि इससे पहले हाल के दिनों में बांग्लादेश और श्रीलंका में भी जनता के भड़कने से ऐसे हालात हो गये थे जब तख्तापलट हुआ। भारत जैसे बड़े देश में ऐसी भगदड़ तो हो नहीं सकती है लेकिन यह घटनाएं बता रही हैं कि न जाने कब कौन सा रुख हो। इसलिये गाँव स्तर से लेकर ब्लाक, जिला, प्रदेश, देश सभी जगह सम व्यवस्था बनी रहे। हमारे जन प्रतिनिधि दर्पण जैसे हों, जिसमें जनता स्वयं को पाए और उसे दिखाई दे कि प्रकृति ने जिस स्वाभाविक रूप से उसे इस धरा पर भेजा है, उसका अधिकार उसे मिल रहा है। न्याय व्यवस्था बनी रहे।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

नेपाल हिंसा में जला, इस्तीफे, तख्तापलट

काठमाण्डू। अपंजीकृत सोशल मीडिया मंचों पर प्रतिबन्ध लगाने के सरकार के फैसले बाद नेपाल मानो जल उठा है। हिंसक झड़पों में दर्जन से अधिक लोगों की मौत व कई घायल हो गये। सरकार के फैसले से उग्र प्रदर्शन हुए में नेपाल के प्रधानमंत्री के.पी. शर्मा ओली ने इस्तीफा दिया। पश्चिमी नेपाल की एक जेल में सुरक्षा कर्मियों के साथ झड़प में 5 किशोर बन्दियों की मौत हो गई, जबकि सरकार विरोधी हिंसक प्रदर्शन के दौरान देशभर की विभिन्न जेलों से 7000 से अधिक कैदी फरार हो गये। प्रदर्शन में मंत्रियों के घर फूंक डाले, पिटाई हुई है। ऐसे में सेना ने मोर्चा सम्भालते हुए पूरे देश में कर्फ्यू लगा दिया गया। इसके बाद अन्तरिम सरकार का नेतृत्व को लेकर रायशुमारी हुई। साथ ही दो पक्ष भिड़ते रहे।

राधाकृष्णन नए उपराष्ट्रपति

नई दिल्ली। भाजपा के नेतृत्व वाली राजक के उम्मीदवार सीपी राधाकृष्णन देश के 17वें उपराष्ट्रपति बने। उन्होंने संयुक्त विपक्ष के उम्मीदवार सुदर्शन रेड्डी को 152 वोटों के बड़े अन्तर से हराया।

अनुतिन थाईलैंड के नए प्रधानमंत्री

बैंकॉक। थाईलैंड में वरिष्ठ नेता अनुतिन चार्नविराकुल को शाही अनुमोदन प्राप्त करने के बाद देश के प्रधानमंत्री बन गये हैं। अदालत के आदेश पर उनके पूर्ववर्ती को पद से हटाए जाने के बाद दो दिन पहले संसद द्वारा उन्हें इस पद के लिए चुना गया था।

फलस्तीन एक्शन रैली में गिरफ्तार

लन्दन। महानगर पुलिस ने फलस्तीन एक्शन के आतंकी समूह घोषित करने खिलाफ किए गए प्रदर्शन के दौरान प्रदर्शनकारियों द्वारा अधिकारियों पर लात चलाने और थूकने जैसे असहनीय दुर्व्यवहार की निन्दा की। उसने इस मामले में करीब 425 प्रदर्शनकारियों को गिरफ्तार किया है।

वीजा निलम्बन की चेतावनी

लन्दन। ब्रिटेन की नवनियुक्त गृह सचिव शबाना महमूद ने आव्रजन पर कड़ा रुख अपनाते हुए उन देशों के वीजा निलम्बन की चेतावनी दी है जो अवैध प्रवासियों को वापस लेने और उनके साथ सहयोग करने से इनकार करते हैं। कहा जो देश सहयोग नहीं करते, हमारे लिए इसका मतलब भविष्य में वीजा में कटौती सम्भावना है। उम्मीद है ऐसे देश नियमों का पालन करेंगे।

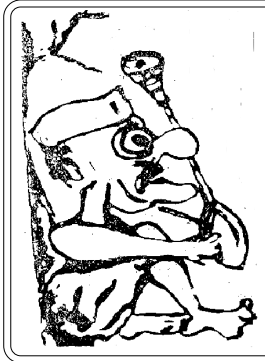

फसक

दाज्यू, उलझाकर सुलझाने का मजा ले रहे ठैरे

बहुत ज्यादा हाईटेक हो जाने के बाद रिसाव हो जाता है बल

दाज्यू, वरिष्ठ नेता हरक सिंह रावत लगातार कौतिक कर रहे हैं। उनका कहना है- 'अब राजनीति से सनातनी हो गया हूँ। न मुख्यमंत्री बनने का मोह है और न ही विधायक बनने का शौक।' दाज्यू, जमाने की बलिहारी है। उलझाकर सुलझाने का मजा ले रहे ठैरे। यही सब होने लगा है चालाक दुनिया में। कौन क्या कर रहा है यह समझ पाना कठिन है। गौलापार स्टेडिम में उत्तराखण्ड नेशनल फॉसिंग प्रतियोगिता में एसोसिएशन के महासचिव राजीव मेहता बहुत नाराज हो गये। कह रहे थे- 'उत्ताराखण्ड में नेशनल प्रतियोगिता करवाकर हमने गलती कर दी। यहां के अधिकारी फोन तक नहीं उठाते, किसी से कोई जवाब नहीं मिलता। स्टेडियम का एयर कंडीशन सिस्टम काम ही नहीं कर रहा। राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में खिलाड़ियों को बुनियादी सुविधाएं तक नहीं मिल रही हैं।'

दाज्यू, राजीव दा को क्या बताएं आप जानने ही वाले ठैरे कि बहुत ज्यादा हाईटेक हो जाने के बाद रिसाव हो जाता है बल। दाज्यू, राजीव दा के बाद सहायक खेल निदेशक कुमाऊँ मण्डल रशिका सिद्दीकी ने ने कहा- 'महासचिव राजीव मेहता के आरोपों में सच्चाई नहीं है।' इसी प्रकार जिला क्रीड़ाधिकारी निर्मला पन्त ने भी इसे पत्रकार वार्ता में दोहराया। दाज्यू, तभी तो कह रहे हैं कि हाईटेक होते मामलों में क्या कहें?

सुनने में आ रहा है कि कुमाऊँ विश्वविद्यालय गुणवत्ता मापदण्ड विकसित करेगा। इसके लिये विशेषज्ञ समिति में विभिन्न विभागों के वरिष्ठ लोग होंगे। दाज्यू, आप जानने ही वाले ठैरे अब क्या जो कहें.....विशेषज्ञ। दाज्यू, शिक्षा विभाग में वर्ष 2023-24 से 2025-26 तक तीन करोड़ 18 लाख से अधिक का गवन हो चुका है बल। विभागीय जाँच में डीईओ बेसिक देहरादून के कार्यालय में कार्यरत उपनल कर्मचारी प्रत्यक्ष रूप से दोषी पाया गया। अब 6 डीईओ बेसिक सहित कुछ अन्य अधिकारी जाँच के घेरे में हैं। दाज्यू, सारे कामकाज सरपट दौड़ रहे ठैरे।

दाज्यू, दिनेशपुर में विधायक अरविन्द पाण्डे के खिलाफ बंगाली समुदाय गुस्से में है। बंगाली कल्याण समिति का कहना है कि विधायक ने टिप्पणी करते हुए समाज को बांटने का काम किया है। वह माफी मांगे। दाज्यू, नेता लोग डांटने और बांटने वाले ठैरे। क्याप्प बात हुई इनकी कही।

अल्मोड़ा मुख्यालय की एक महिला को जागेश्वर निवासी एक युवक ने जान से मारने की धमकी दे दी बल। पीड़ित महिला ने पुलिस को कहा- 'व्हसएप ग्रुप पर फोटो वायरल करने अपशब्द भी लिखे।' दाज्यू, जब से व्हसएप ग्रुप बनने शुरू हुए हैं इनमें शंट-अंट के अलावा अंट-शंट भी हो रहा ठैरा। हल्द्वानी में भाजयुमो नेता विपिन पाण्डे को उनके पद से हटा दिया गया है और वह अब अपनी लड़ाई अकेले ही लड़ रहे हैं। दाज्यू, यह तो अटल सच ठैरा कि अपनी पीड़ अपने को ही होने वाली हुई। अब क्या जो कहें, विपिन भी अटल की जगह अटपट हो गया होगा। जैसा कि दूसरे नेता सोचते हैं कि सब कुछ उनका ही है, जिसको चाहें समेट लें। दाज्यू, समझने की बात है जंगल रहे नहीं, नरभक्षी जंगल से ज्यादा शहर में घूमने लगे हैं बल। ऐसे में अपनी संभाल करनी ही चाहिये। -तुम्हारा भुली झकरुवा

नेपाल में हिंसा की आग की आंच

भारत ने गश्त बढ़ाई, सीमा पर चौकन्ने

दार्चुला, बेतड़ी में उग्र प्रदर्शन

कंचनपुर में गृहमंत्री का घर फूंक डाला

ब्रह्मदेव मण्डी में पसरा सन्नाटा

पार्टी छोड़ रहे नेपाल कांग्रेस कार्यकर्ता

हल्द्वानी। पड़ोसी देश नेपाल में भड़की हिंसा व राजनीतिक उथल-पुथल की आंच का प्रभाव सीमा क्षेत्र पर है। उत्तराखण्ड की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर गश्त बढ़ाई गई है और प्रहरी चौकन्ने हैं। भारत-नेपाल के बीच रोटी-बेटी का रिश्ता है और 250 किमी लम्बी सीमा नेपाल से लगी है। इन दिनों नाकेबन्दी के बाद कारोबार प्रभावित है। आवाजाही पर रोक से बाजार भी बन्द हैं। धारचूला सीमा पार दार्चूला और झूलाघाट सीमा पार जूलाघाट में युवाओं ने जबर्दस्त प्रदर्शन किया। सोशल मीडिया पर प्रतिबन्ध के बाद नेपाल में हुए बड़े बबाल का प्रभाव अभी तक है। ऐसे में धारचूला में सीमा से लगे इलाके में सुरक्षा बढ़ा दी है। 11वीं वाहिनी एसएसबी के साथ पुलिस और कस्टम की संयुक्त गश्त जारी है। बताया जा रहा है कि पश्चिम प्रदेश बैतड़ी, दार्चुला में उग्र विरोध प्रदर्शन की आड़ में जिला कारागार में भी तोड़फोड़ हुई और 143 कैदी फरारा हो गये।

नेपाल की राजधानी काठमाण्डू की आग पर दार्चुला और बैतड़ी जिलों में उग्र प्रदर्शन हुआ है। कांग्रेस, नेकपा-एमाले और माओवादी पार्टी के कार्यालयों में तोड़फोड़ हुई है। बैतड़ी के गोठलापानी, गढ़ी, साईलेक बाजार के साथ पूरचूणी, पाटन और देहिमांड में स्कूल बाजार बन्द करवा दिये गये। महाकाली टैक्सी यूनियन ने भी अपनी सेवा बन्द रखी।

टनकपुर से लगी ब्रहमदेव मण्डी में आन्दोलनकारियों ने प्रदर्शन किया जिससे सन्नाटा पसरा है। भारत से ब्रहमदेव स्थित सिद्धबाबा के दर्शन के लिये जाने वाले श्रद्धालुओं की संख्या में गिरावट है। नेपाल में हुई हिंसा के बाद बनबसा सीमा पर कंचनपुर में नेपाल कांग्रेस कार्यकर्ता पार्टी छोड़ रहे हैं। कार्यकर्ताओं का कहना है कि वह बच्चों और युवाओं की हत्या के बाद अब खूनी पार्टी का सदस्य नहीं बने रहना चाहते। टनकपुर-बनबसा की नेपाल सीमा में भी सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई है। एसपी रेखा यादव ने बताया कि धारचूला, बलुवाकोट, पीपली, झूलाघाट क्षेत्र में काली नदी किनारे गश्त की जा रही है। एसएसबी 57वीं वाहिनी के पीलीभीत स्थित उप महानिरीक्षक अनिल कुमार शर्मा और कमाण्डेंट मनोहर लाल सीमा सुरक्षा का नेतृत्व कर रहे हैं। उन्होंने बनबसा, खटीमा से लगी सीमा का निरीक्षण भी किया। कहा कि एसएसबी का पहला कार्य भारत-नेपाल सीमा की चौकसी करना है। सीमा पर पुलिस के साथ पेट्रोलिंग भी की जा रही है। नेपाल के हालातों को देखते हुए सीएम पुष्कर सिंह धामी ने वीडियो कांन्फ्रेंसिंग के द्वारा चम्पावत, पिथौरागढ़, उधमसिंह नगर के जिला प्रशासन, सशस्त्र सीमा बल के अधिकारियों व पुलिस प्रशासन के साथ समीक्षा बैठक की। बैठक में सीमा क्षेत्र की सुरक्षा चुनौतियों, सामुदायिक भागीदारी, खुफिया सूचना तन्त्र की मजबूती तथा केन्द्रीय एजेंसियों से तालमेल के विभिन्न पहलुओं पर गहत विचार-विमर्श किया गया। सोशल मीडिया पर भी निगरानी को कहा गया। सीमा क्षेत्र में रहने वाले शान्ति व्यवस्था की कामना कर रहे हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

अपनी माटी

सफर-ए-बिल्जू : माँ नन्दादेवी का स्मरण

जगदीश सिंह बजवाल

आप चाहे कहीं भी रहें, अपनी माटी का प्यार हमेशा आपको अपनों से जोड़ता है। अपनी माटी से जुड़ने के बड़े बहाने हमारे तीज-त्यौहार हैं। आओ हर ऐसे अवसर को अपनाने की जिद हम सब करें।

ऐसा ही सुन्दर अवसर इस बार भी बना। जोहार घाटी के सुरम्य वादियों में माँ नन्दा देवी की पूजा -अराधना भाद्र अष्टमी का पर्व तथा बिल्जू गाँव तक की यात्रा सभी भक्तजनों के लिए बहुत सुखद अनुभव की रही है। वास्तव में जो इस पर्व में अपने पैतृक गाँव में पहुँचे थे उन्हें सौभाग्यशाली की कहा जाएगा (माँ नन्दा की असीम कृपा अवश्य बनी रहेगी। सभी संकल्पबद्ध है, कि हमेशा उस स्वर्ग-सा भूमि, अपनी थाती, विरासत, पैतृक भूमि के प्रति समलृपत रहकर अपने पितरों के प्रति सम्मान बनाए रखेंगे।

हमें अपने नैसर्गिक सुन्दरता से भरे गाँव बिल्जू को अतीत की समृद्धता, आबाद होने का स्मरण करते पुनः कटिबद्ध होकर विकसित करना है जिसमें सभी ग्रामीण जनों का सहयोग की आवश्यकता है, आगे अलग ग्राम पंचायत बने। मेरे बोट का महत्व बिल्जू गाँव में ही है, हल्द्वानी, देहरादून दिल्ली में नहीं, बिल्जू के प्रवासी जन एक बोटर कार्ड बिल्जू के लिए भी दे तो वहाँ कोई फर्क नहीं पड़ने वाला है, जिस संगोष्ठी में चर्चा बिल्जू गाँव में शासन, प्रसाशन के ओहदे पद पर बैठे श्री केदार सिंह बृजलाल, मुख्यमंत्री प्रतिनिधि, उप निदेशक समाज कल्याण, श्री प्रकाश सिंह बृजवाल, सरपंच बिल्जू श्री रमेश सिंह बृजवाल सभी गणमान्यों के बीच हुई है। बिल्जू के भविष्य के विकास में आपका योगदान महत्वपूर्ण होगा, बिल्जू गाँव में आज प्रवास करने वाले आर्थिक कमजोर ग्रामीणों के लिए रोजगार के अवसर व सहयोग की दरकार है। सभी से अनुरोध करते है अपने घर के एक सदस्य का नाम बिल्जू में लिखना अति आवश्यक समझे। मैं अपना नाम बिल्जू में जोड़ना उपयुक्त समझता हूँ प्रयासरत हूँ।

जोहार बिल्जू का अष्टमी पूजा अराधना भक्तिभाव के साथ आनन्दपूर्वक रहा, कष्ट तो आता रहता हैं और चला जाता है यादगार सफर के साथ माँ नन्दा को कोटिशः नमन करता है।

एकता मंच की जनसभा

संविधान की 5वीं अनुसूची लागू किए जाने की मांग

हल्द्वानी। उत्तराखण्ड एकता मंच ने संविधान की 5वीं अनुसूची लागू किए जाने की मांग को लेकर अपना अभियान तेज दिया है। इसी सिलसिले में मंच ने 'उत्तराखण्ड मूल निवासी जनसभा' का आयोजन किया। इससे पहले संयोजक महेन्द्र सिंह रावत ने अपनी टीम के साथ तमाम बुद्धिजीवियों और युवाओं से सम्पर्क कर अभियान से जुड़ने की अपील की।

उन्होंने बताया कि यह संगठन उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्र में रोजगार, भाषा-संस्कृति संरक्षण, महिला सुरक्षा तथा जल, जंगल, जमीन पर पुनः अधिकार प्राप्त करने हेतु भारतीय संविधान की पांचवी अनुसूची दर्जा लागू किये जाने की पुरजोर मांग कर रहा है। इस मांग के समर्थन बुद्धिजीवी वर्ग सामने आया है। प्रो.अजय रावत, पद्मश्री यशवन्त सिंह कठोच, पूर्व लेफ्टिनेंट जनरल गम्भीर सिंह नेगी, डॉ. जीतराम (पूर्व सचिव हिन्दी, संस्कृत, गढ़वाली, कुमाउंनी एवं जौनसारी अकादमी दिल्ली सरकार) और जौनसार से इतिहासकार टीकाराम शाह भ्ज्ञी इसमें शामिल हैं। पूरे देश की सैकड़ों संस्थाओं और समाजसेवियों ने इस मुद्दे पर समर्थन दिया है और यह प्रस्ताव उत्तराखण्ड विधानसभा में प्राइवेट मेम्बर बिल के रूप में प्रस्तुत किया जा चुका है। इसी क्रम में दिल्ली के जन्तर-मन्तर पर आयोजित 'उत्तराखण्ड मूल निवासी जनसभा' के बाद हल्द्वानी में यह आयोजन था। इस लड़ाई को बराबर लड़ा जाएगा।

हल्द्वानी में हुई सभा में पहाड़ के सच और उजागर करते हुए वक्ताओं ने कहा कि आज पहाड़ों में शिक्षित युवाओं को भी रोजगार नहीं मिल पा रहा है। पिछले 40 वर्षों में 3200 से अधिक गांव पूरी तरह मानवरहित हो चुके हैं। खेती खत्म हो रही है और वन विभाग हमारी जमीन कब्जा कर रहा है। हमारे ही पुरखों के जल, जंगल, जमीन से हमें ही दूर किया जा रहा है। दूसरी ओर अन्य हिमालयी राज्यों जैसे- सिक्किम, हिमाचल प्रदेश, मेघालय, त्रिपुरा और अरुणाचल प्रदेश में स्थिति बेहतर है, क्योंकि इन राज्यों के मूलनिवासियों को जनजातीय दर्जा प्राप्त है। गढ़वाली-कुमाउंनी इकलौता ऐसा समुदाय है जिससे आरक्षण का अधिकार छीना गया है। कहा कि 1972 तक उत्तराखण्ड के पहाड़ी इलाकों में जनजातीय जैसे कानून लागू थे, जो हटा दिए गए। 1975 तक पहाड़ी क्षेत्रों के युवाओं को शिक्षा में 6 प्रतिशत और सरकारी नौकरियों में 3 प्रतिशत आरक्षण मिलता था, इसके भी समाप्त कर दिया गया। भारत सरकार की 'लोकुर कमेटी 1965' ने जनजातीय दर्जा देने के सभी मापदण्डों को गढ़वाली-कुमाउंनी समुदाय पूरा करता है। क्योंकि विशेष भौगोलिक स्थिति इसकी है। पहाड़ का 80 प्रतिशत हिस्सा वन क्षेत्र है। दुर्गम पर्वतीय क्षेत्रों में कठिन जीवनशैली पहाड़वासियों को वनवासी दर्जे का स्वाभाविक हकदार बनाती है। सामाजिक और आर्थिक पिछड़ापन भी इसका आधार ही है। अधिकांश पहाड़ी परिवारों के पास आधा एकड़ से भी कम भूमि बची है, जिसके कारण वे भूमिहीन या सीमान्त किसान की श्रेणी में आते हैं। स्कूल, कॉलेज, अस्पताल जैसी मूलभूत सुविधाएं आज भी पहाड़ों में नदारद हैं।

विशिष्ट संस्कृति ओर आदिम लक्षण भी इसका कारण हैं। उत्तराखण्ड का जनमानस प्रकृति पूजक है। फूलदेई, खतडुवा, इगास बग्वाल, हलिया दशहरा, रम्माण, हिलजात्रा जैसे त्यौहार, कठपतिया, ऐपण कला, जादू-टोने में विश्वास, जागर और वनों पर आधारित खेती-पशुपालन यहां की जनजातीय परम्पराओं को दर्शाते हैं। उत्तराखण्ड में खेती आज भी आदिम तरीके से होती है। न मशीनों का उपयोग, न सिंचाई के साधन, न ही रासायनिक खाद का प्रचलन। मौसन पर निर्भर यह कृषि बैलों या मनुष्यों द्वारा हल खींचकर की जाती है। जमीनें व्यक्तिगत नाम पर नहीं बल्कि सामुदायिक गोल खाता प्रथा के तहत चलती है। ये सभी लक्षण उत्तराखण्ड को जनजातीय दर्जे का स्वाभाविक हकदार बनाते हैं। सवाल उठाया है कि उत्तराखण्ड के अलावा बाकी 11 हिमालयी राज्यों के मूल निवासियों को ट्राइब स्टेटस मिला हुआ है। उत्तराखण्ड में नेपाली समुदाय, वन गुर्जर और 1971 में पूर्वी पाकिस्तान से आए लोगों को जनजातीय दर्जा देने जा रही है। ऐसे में पूरे प्रदेश को सम्मान हो।

ज्योतिष की बातें- 247

इस सप्ताह चन्द्रमा के अतिरिक्त अन्य किसी भी ग्रह का राशि परिवर्तन नहीं हो रहा है। सम्पूर्ण सप्ताह बुध अपनी उच्चराशि कन्या में, सूर्य मंगल व शनि समराशि कन्या तुला व मीन में क्रमशः, गुरु व शुक्र अपनी शत्रुराशि मिथुन व सिंह राशि में गोचर करेंगे, तथा चन्द्रमा इस सप्ताह कन्या, तुला व वृश्चिक राशि में क्रमशः गोचर करेगा।

सोमवार 22 सितम्बर 2025 को सूर्य सायनमान से तुला राशि में प्रवेश करेगा। इस दिन दिनमान और रात्रिमान समान होगा। आज से उतरी गोलार्ध में रात्रिमान बढ़ना शुरू हो जाएगा और दक्षिणी गोलार्ध में दिनमान बढ़ना शुरू हो जाएगा।

नवरात्रि प्रारम्भ- आश्विन शुक्लपक्ष प्रतिपदा उदयव्यापिनी (न्यूनतम एक मुहूर्ता) तिथि में कलश स्थापना के साथ नवरात्रि का पर्व प्रारम्भ हो जाता है। अतः सोमवार 22 सितम्बर 2025 को नवरात्रि का पर्व प्रारम्भ होगा। अगले 9 दिन दुर्गा जी का पूजन अर्चन विधि विधान से संयमपूवक करना चाहिए।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 137

मन्दिरों में भीड़

आजकल मन्दिरों में भीड़ बहुत अधिक हो रही है। काशीविश्वनाथ मन्दिर वाराणसी में भगवान भोलेनाथ के दर्शन करने में सामान्य दिनों में लाइन में लगे लगे चार-पाँच घण्टे का समय लगता है और विशेष दिनों में तो बात ही अलग है, 12 घण्टे का भी समय लग सकता है। इतने समय बाद भी दर्शन तो केवल एक सेकण्ड के लिए ही मिलते हैं। इसी प्रकार किसी भी द्वादशज्योर्तिलिंग मन्दिर में चार से आठ घण्टे का समय तो लगता ही है। राम मन्दिर अयोध्या में आजकल सामान्य दिनों में ही 8-10 घण्टे का समय लग रहा है। चैत्र आदि विशेष दिनों में तो 24 घण्टे का भी समय लग सकता है। वैष्णौ मन्दिर में सामान्य दिनों में 12 घण्टे और विशेष अवसरों पर 24 घण्टे का समय लग सकता है। इसी प्रकार रामेश्वर मन्दिर, पद्मनाभ मन्दिर, बद्रीनाथ मन्दिर, गंगासागर आदि किसी भी मन्दिर में 8-10 घण्टे का समय तो लगता ही है। शक्तिपीठों में मैहर देवी आदि मन्दिरों में भी 4-6 घण्टे का समय तो लाइन में लगे लगे हो ही जाता है। अब तो स्थानीय महत्व के मन्दिरों जैसे सन्त ज्ञानेश्वर मन्दिर, तुलजा भवानी मन्दिर, स्वामी समर्थ मन्दिर अक्कलकोट आदि किसी भी मन्दिर में दो-चार घण्टे का समय तो लग ही जा रहा है।

यदि 30-40 वर्ष पहले की बात करें तो सन् 1987 में मैं काशी विश्वनाथ के दर्शन करने बिना किसी रोक-टोक के सीधे गर्भगृह तक चला गया था और तसल्ली से भोलेनाथ के दर्शन करके आ गया । इसी प्रकार 1993-94 में त्र्यम्बकेश्वर मन्दिर में, महाकालेश्वर मन्दिर उज्जैन में, मैहर देवी मन्दिर जाकर आराम से दर्शन किए थे। उस समय भीड़ की तो कल्पना ही नहीं थी, न कहीं कोई अव्यवस्था या लूटपाट होती थी ।

क्या कभी वही पुराना समय आएगा कि जब भक्त अपने भगवान के दर्शन आराम से सीधे गर्भगृह में जाकर बिना किसी रोक-टोक के कर सकेंगे ।

-ओंकार नाथ कोष्टा

छात्रसंघ चुनाव के लिये बजने लगे ढोल

उत्तराखण्ड में छात्र संघ चुनाव के लिये ढोल बजने लगे हैं। पिछली बार चुनाव टल जाने के बाद से ही छात्र नेता नाराज थे और इस बार समय से चुनाव कराने को लेकर माहौल बनाया जा रहा था और प्रदर्शन भी हुए। इस बीच विश्व विद्यालयों के साथ बैठक में 27 सितम्बर का दिन तय किया गया है।

दन्या कालेज भवन निर्माण में देरी से छात्र नाराज

अल्मोड़ा। दन्या में निर्धारित समय पर कालेज भवन निर्माण न होने से छात्रों में भारी रोष है। नाराज छात्र-छात्राओं ने मण्डी परिषद अध्यक्ष का पुतला फूंकते हुए नारेबाजी की। प्रदर्शनकारियों ने दन्या बाजार में जुलूस भी निकाला और सभा की। इस मौके पर वक्ताओं ने कहा कि वर्ष 2021 में डिग्री कालेज का संचालन शुरू हो गया था। भवन निर्माण को सरकार ने वजट आवंटित कर मण्डी परिषद को कार्यदाई संस्था बनाया। मण्डी परिषद की निविदा शर्तों के अनुसार 2023 में भवन बनकर तैयार होना था।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

दिव्यांग छात्रों को मिलेगी छूट

देहरादून। उत्तराखण्ड बोर्ड के 10वीं और 12वीं के दिव्यांग छात्र-छात्राओं को परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिये 5 अंकों की छूट दिये जाने का प्रस्ताव माध्यमिक शिक्षा निदेशालय ने शासन को भेजा है। बोर्ड की ओर से दिव्यांग छात्र-छात्राओं को परीक्षा के दौरान प्रति घण्टा 20 मिनट का अतिरिक्त समय दिया जाता है। औसतन हर साल दो हजार से अधिक व्यक्तिगत और संस्थागत छात्र-छात्राएं इसका लाभ ले रहे हैं।

अर्द्धकुम्भ के लिये मास्टर प्लान

हरिद्वार। आगामी अर्द्धकुम्भ के लिये स्वास्थ्य विभाग ने मास्टर प्लान तैयार किया है। सीएम के निर्देशों के तहत विभाग ने तीर्थयात्रियों की सुविधा व सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए ये प्लान तैयार किया है, जिसके तहत 54 करोड़ रुपये का बजट प्रस्तावित है। सचिव स्वास्थ्य डॉ.आर.राजेश कुमार ने बताया कि हमारा प्रयास मेले में आने वाले हर श्रद्धालु को चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराना है।

थल में बन्दरों का आतंक, प्रदर्शन

थल। कटखने बन्दरों के आतंक से परेशान महिलाओं ने प्रदर्शन करते हुए इनसे निजात दिलाने की मांग की। प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी कर रही महिलाओं ने कहा कि 50 से अधिक लोगों को बन्दर घायल कर चुके हैं। स्कूल जा रहे छोटे बच्चे डरने लगे हैं। कई बार बन्दरों को पिंजरे में ले जाकर दूर भेजने को कहा है लेकिन कोई सुनवाई नहीं हो रही। यदि अब भी सुधार नहीं हुआ तो उग्र आन्दोलन किया जायेगा।

पिथौरागढ़ में खुलेगा पासपोर्ट सेवा केन्द्र

पिथौरागढ़। पासपोर्ट सेवा केन्द्र खोलने की दिशा में प्रशासन की ओर से पहल की गई है। अस्थायी पासपोर्ट सेवा केन्द्र कलक्ट्रेट परिसर में स्थापित किया जायेगा। डीएम ने प्रस्तावित स्थल का निरीक्षण भी किया है।

खून से लिखकर भेजा ज्ञापन

चम्पावत। पाटी महाविद्यालय की समस्याओं के समाधान की मांग के लिये छात्रों ने खून से लिखकर सीएम, शिक्षा मंत्री और राज्यपाल को ज्ञापन भेजा है। स्नातकोत्तर कक्षा संचालन सहित कई मांगे इनकी हैं।

मेधावियों को किया सम्मानित

रानीखेत। श्री पंचेश्वर महादेव शिवमन्दिर एवं धर्मशाला समिति के तत्वावधान में 22वीं छात्रवृत्ति एवं प्रतिभा सम्मान समारोह किया गया। समारोह में क्षेत्र के 11 विद्यालयों के मेधावी, दिव्यांग निराश्रित 123 विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान की गई। मुख्य अतिथि संयुक्त मजिस्ट्रेट सुश्री गौरी प्रभात थीं।

गेट मीटिंग में रक्षा निर्माणियों के निजीकरण का विरोध किया

देहरादून। देशभर की रक्षा निर्माणियों के निजीकरण के विरोध में कर्मचारियों ने आर्डनेंस फैक्ट्री के समक्ष गेट मीटिंग का आयोजन किया। जिसमें रक्षा निर्माणियों के निजीकरण के विरोध के साथ ही पुरानी पेंशन योजना की बहाली की हुंकान भरी।

कर्मचारी नेताओं ने आरोप लगाया कि सरकार कारपोरेशन के नाम पर लालच और दबाव की नीति अपना रही है। 31 दिसम्बर 2025 को डेपुटेशन अवधि समाप्त होने से पहले लगभग 70 हजार कर्मचारियों को विकल्प भरने के लिये बाध्य किया जाएगा और उन्हें झांसा दिया जायेगा कि कारपोरेशन में आने पर वेतन वृद्धि और सुविधाएं मिलेंगी। इसके लिये तीन कमेटी गठित की गई हैं, जिनमें से एक विकल्प फार्म भरने, दूसरी कारपोरेशन के गठन और तीसरी सेवानिवृत्ति से जुड़ी मांगों को लेकर बनाई गई है। कर्मचारी संगठनों ने इन कमेटियों का बहिष्कार करने की घोषणा की है और स्पष्ट किया है कि सेवानिवृत्ति का निर्धारण रक्षा मंत्रालय के कागजातों के अनुसार ही होना चाहिए।

कपकोट में आपदा का खतरा बना है

सापकी तोक में भू-धंसाव, मकानों में दरारें

चुड़िया गधेरे पर बने पुल और पहुंच मार्ग क्षतिग्रस्त

बागेश्वर। जिले में प्रकृति का सबसे ज्यादा प्रकोप कपकोट क्षेत्र में बना हुआ है। इस बार भी मूसलाधार बारिश से ज्यादा क्षति कपकोट को हुई है। सीमान्त क्षेत्र में अभी तक भी आवागमन सहित अन्य में दिक्कतें हैं।

कर्मी ग्राम पंचायत का तल्ला सापुली तोक भू-धंसाव की जद में है। यहाँ दस परिवारों के मकानों में दरारें पड़ चुकी हैं राजस्व विभाग ने भी क्षेत्र का निरीक्षण कर सूचना उच्चाधिकारियों को दे दी है।

दूसरी ओर चुड़िया गधेरे पर बना पैदल पुल और उसका पहुंच मार्ग क्षतिग्रस्त होने से खतरा बना हुआ है। मरम्मत कार्य के बिना यह कार्य आज तक टाला गया है जबकि पिछले साल बरसात में पुल का पहुंच मार्ग टूट गया था। यहाँ चौड़ी दरारों और धंसे रास्ते से लोग जोखिम उठाकर आवाजाही कर रहे हैं।

सीएम से मिलकर इस्तीफा वापस लिया

टनकपुर। नगर पालिका के जिन 5 सभासदों ने विकास कार्य ठप होने, पालिका प्रशासन पर तनाशाही समेत कई आरोप लगाते हुए अपना इस्तीफा दे दिया था, मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से मिलकर इन्होंने अब अपना इस्तीफा वापस ले लिया है।

देहरादून में सीएम से भेंट करते हुए सभासदों ने अपनी व्यथा सुनाई और चाहा की सीएम हस्तक्षेप करें क्योंकि यह उनका विधानसभा क्षेत्र है।

लौटने के बाद वार्ड 7 के सभासद चर्चित शर्मा, वार्ड 8 सभासद आशा भट्ट, वार्ड 9 सभासद बबीता वर्मा, वार्ड 3 सभासद दिलदार अली, वार्ड 4 सभासद वकील अहमद ने संयुक्त रूप से इस्तीफा वापस लेने की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री धामी से शासकीय आवास पर विभिन्न मुद्दों पर सकारात्मक सम्वाद हुआ। उन्हें आवश्वस्त किया गया है कि सबकुछ ठीक होगा।

क्वारब की बदहाली पर रोष, जांच हो

अल्मोड़ा। अल्मोड़ा-हल्द्वानी राष्ट्रीय राजमार्ग के क्वारब के पास बदहाल सड़क को लेकर व्यापारियों में रोष है। नाराज व्यापारियों ने डीएम आलोक कुमार पाण्डेय को ज्ञापन सौंपते हुए कहा कि क्वारब मार्ग बार-बार बन्द होने से व्रूापार में भारी असर पड़ा है। चेतावनी दी कि यदि जल्द ही मार्ग को दुरुस्त नहीं किया गया तो उग्र आन्दोलन किया जायेगा। देवभूमि व्यापार मण्डल जिला अध्यक्ष मनोज सिंह पंवार ने कहा कि क्वारब सड़क के क्षतिग्रस्त होने से जनता व व्यापारियों को नुकसान हो रहा है। मार्ग खराबी से घरेलू जरूरी सामान नहीं मिल पा रहा है।

दूसरी ओर नाराज कांग्रेसियों ने क्वारब निर्माण कार्य की उच्चस्तरीय जांच की मांग करते हुए डीएम को मांग पत्र दिया है। कार्यकर्ताओं ने कहा कि हो रहे निर्माण कार्य में घोर अनियमितता है। विधायक मनोज तिवारी के नेतृत्व में डीएम एक पास पहुंचे शिष्टमण्डल ने कहा कि जिस ओर सुरक्षा दीवार दी गई है उसमें बड़ी-बड़ी दरारे पड़ गई हैं। कहा कि क्वारब से एक एक ओर लोगों की यात्रा कठिन हो रही है दूसरी ओर महंगाई की मार पड़ रही है।

सिनेमा हॉल भूमि पर कॉम्प्लेक्स बनेगा

नैनीताल। मल्लीताल स्थित अशोक सिनेमा हॉल की भूमि पर अब स्टैग पार्किंग नहीं बल्कि शापिंग कॉम्प्लेक्स बनेगा। हाईकोर्ट के निर्देशों के बाद नगर पालिका ने चार मॉजिला भवन का डिजाइन तैयार कर पर्यटन विभाग को सौंप दिया है। इसमें दोनों विभाग मिलकर प्रोजेक्ट की डीपीआर तैयार करेंगे।

प्रोजेक्ट को धरातल पर उतरने के बाद शहर आने वाले पर्यटक एक ही छत के नीचे खरीददारी करने कर सकेंगे। कॉम्प्लेक्स में बच्चों के मनोरंजन के लिए प्ले स्टेशन खोलने का प्रस्ताव है।

बताते चलें कि ब्रिटिशकाल में भारतीयों के मनोरंजन के लिये अशोक सिनेमा हॉल मुख्य साधन था। 2015 में लीज समाप्त होने के बाद हाल को ध्वस्त कर दिया गया था। खाली भूमि पर अनुबन्ध के आधार पर कॉम्प्लेक्स व सिनेमाहाल बनाया जाना था। ठेकेदार के शर्तों का अनुपालन नहीं करने पर शासन स्तर से लीज निरस्त कर दी गई। जिसके बाद से ही खाली भूमि पर कभी पालिका तो कभी ठेकेदार से अनुबन्ध कर पार्किंग का संचालन कराया जा रहा था। बीते वर्ष पालिका ने स्टैग पार्किंग निर्माण का प्रोजेक्ट भी बनाया था।

अल्मोड़ा में पार्षद मांगों को लेकर मुखर

अल्मोड़ा। नगर की तनी सूत्रीय मांगों के निवारण को लेकर पार्षदों ने मोर्चा खोल दिया है। नाराज पार्षदों में ने जल्द ही इन मांगों पर अभी तक भी सकारात्मक कार्रवाई न होने पर आन्दोलन तेज किया जायेगा। इसकी शुरुआत अनशन से होगी।

नगर निगम सभागार में हुई बैठक में पार्षदों ने कहा कि बीते दिनों निगम की बोर्ड बैठक के दौरान सभी पार्षदों ने तीन महत्वपूर्ण विन्दुओं पर चर्चा करने के साथ ही जल्द कार्रवाई की मांग उठाई थी लेकिन एक माह से अधिक समय बीत जाने के बाद भी अब तक कोई सकारात्मक कार्रवाई नहीं हो सकी है।

बैठक में पार्षद वैभव पाण्डे, कमला किरोला, नवीन चन्द्र आर्य, विजय भट्ट आदि मौजूद थे।

दयारा बुग्याल में दूध मक्खन की होली

उत्तरकाशी। दयारा बुग्याल में इस बार अंडुड़ी मेला (बटर फस्टिवल) धराली आपदा के कारण 20 दिन बाद मनाया गया। ग्रामीणों ने दूध दही मक्खन की होली खेली। राधा-कृष्ण बने पात्रों ने दही की हांडी को फोड़कर ग्रामीणों को आशीर्वाद दिया और वन देवियों को भोग लगाया गया। दयारा बुग्याल में हर वर्ष भाद्रपद की संक्रान्ति के दिन यह आयोजन होता है लेकिन वर्ष आपदा के कारण इसका समय और तिथि बदला गया।

अनुमति बिना जेल में मोबाइल नहीं

हल्द्वानी। जेल अधीक्षक प्रमोद पाण्डे ने बताया है कि अब जेल में काम करने वाले कार्मिक को भी जेल में मोबाइल ले जाने की अनुमति नहीं होगी। यदि उन्हें मोबाइल ले जाना है तो इसके लिये मुख्यालय से अनुमति लेनी होगी। इस मामले में मुख्यालय से एक पत्र उप कारागार हल्द्वानी को मिला है। जेल में किसी भी बाहरी व्यक्ति को इजाजत नहीं है।

परिक्रमा

डॉ.जी.एस.तितियाल सम्मानित

हल्द्वानी। लायन्स क्लब ग्रीन सिटी की ओर से नेत्रबैंक की स्थापना करने वाले डॉ. जी.एस.तितियाल को उत्तराखण्ड गौरव चिकित्सा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वह वर्तमान में ऊधमसिंह नगर मेडिकल कालेज में प्राचार्य के पद पर तैनात हैं। कठघरिया में हुए आयोजन में नेत्रदान महादान विषय पर संगोष्ठी भी की गई। बताया कि हल्द्वानी मेडिकल कालेज में अब तक सौ से अधिक लोग नेत्रदान कर चुके हैं।

मालिकाना हक को लेकर आन्दोलन

हल्द्वानी। अखिल भारतीय किसान महा सभा बागजाला कमेटी के नेतृत्व में ग्रामीणों का अनिश्चितकालीन धरना प्रदर्शन जारी है। 8 सूत्रीय मांगों में भूमि पर मालिकाना अधिकार, नए निर्माण पर लगी रोक हटाना और पंचायत चुनाव का अधिकार बहान करना प्रमुख है। चल रहे धरना प्रदर्शन पर हेमा देवी ने कहा कि हमारे बुजुर्गों की भूमि हमें ही बचानी है। महासभा प्रमुख उर्मिला रैस्वाल सहित तमाम लोग धरने पर हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

नियमित भाषा.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

के आधार पर आज के भाषा विज्ञान का अर्थविज्ञान अर्थात् सिमेन्टिक्स टिका है। दूसरे शब्दों में भाषाविज्ञान ने जो काम आज किया है।, यस्क ने ठीक वही काम आज से पाँच हजार साल पहले किया था।

पाँच हजार साल पहले कैसे? क्योंकि यस्क महाभारत से बस चंद दशक पहले ही हुए थे। अपने निरुक्त में उन्होंने भीम के पिता शान्तनु और शान्तनु के भाई देवापि का जिस तरह से वर्णन किया है, उससे असंदिग्ध रूप से मान लिया गया है कि यस्क शान्तनु समकालीन थे।

वाल्मीकि के समय ही जो वैदिक भाषा बोलचाल का रूप छोड़कर साहित्यिक हो गई थी, महाभारत तक आते-आते वह काफी दुरूह भी हो गई थी और यस्क ने इसी दुरूहता को आसान करने के लिए अपना ग्रन्थ लिखा था। शब्दों का अर्थन करने के अलावा यस्क वेदों को समझने की भी खास कोशिशें करते नजर आते हैं। वे कहते हैं कि वेदों के मन्त्र तीन तरह के हैं। कुछ अधिभौतिक हैं, कुछ आधिवैदिक हैं और कुछ आध्यात्मिक हैं। एकाध जगहों पर यस्क कुछ नए किस्म के प्रयोग भी करते हैं। मसलन वे बताते हैं कि एक ही मंत्र की व्याख्या यज्ञवादी कैसे करेंगे, इतिहासकार कैसे करेंगे या काव्यशास्त्री कैसे करेंगे। क्या मतलब है इस सबका? यह कि वैदिक भाषा की तरह वैदिक मन्त्र भी, महाभारत के समय तक काफी दुरूह हो चुके थे और लोगों के बीच इन मन्त्रों की व्याख्या करने के तरीकों के बारे में कई तरह की धारणाओं व स्थापनाओं का विकास हो चुका था। इस हद तक कि देश में वेदों को बेकार का ग्रन्थ मानने वालों की एक लॉबी ताकतवर हो चुकी थी।

यस्क ने 'मन्त्र सार्थक है या अर्थहीन' इस सवाल पर भारी-भरकम तर्क-वितर्क से भरी बहस चलवाकर अन्ततः उस पार्टी को अपना वोट दे दिया है, जो वेदों को अर्थवान मानती थी। जाहिर है कि अगर यस्क वेदों के मन्त्रों को अर्थहीन मान लेते तो उनका अर्थ करने के इतने वैज्ञानिक नियमों का सूत्रपात वे कैसे कर पाते?

ऐसा मानने वाले भी कम नहीं, जो कहते हैं कि निर्वचन के सहारे अर्थविज्ञान का प्रवर्तन करने वाले यस्क कोई पहले आचार्य नहीं थे। इस मान्यता का आधार यह है कि खुद यस्क ने अपने निरुक्त ग्रन्थ से पहले बारह आचार्यों का उल्लेख किया है। इन आचार्यों के नाम जान लेना रोचक हो सकता है। नाम हैं- औदुम्बरायण, औमपन्यव, शाकटायन, गार्ग्य, वार्ष्यापाणि, आग्रहायण, और्णवाभ, शाकपूणि, तैटीकि, गालव, स्थौलाष्ठीवी और क्रोष्टु। हैं न मजेदार नाम? आजकल कहीं ऐसे नाम सुनने को मिलते हैं?

इन नामों को लेकर यह विवाद भी चलता रहता है कि यकीन से कह नहीं सकते हैं कि इन्होंने अपने-अपने निरुक्त ग्रन्थ लिखे थे या कि इनके कुछ मत ही लोक में प्रचलित हो गए थे। मान लिया कि उनमें से हरेक ने अपना-अपना निरुक्त लिखा था तो जाहिर है कि यस्क का निरुक्त नए किस्म का, मौलिक उद् भावनाओं वाला एक परिपूर्ण ग्रन्थ रहा होगा, जिसके बौद्धिक तेज के आगे शेष सभी पूर्ववर्ती ग्रन्थों की ऐसी बलि चढ़ी कि आज उनमें से एक का भी निरुक्त ग्रन्थ नहीं मिलता।

देश के ज्ञान के विकास में यस्क का योगदान तो मालूम पड़ गया कि उन्होंने दुरूह होती चली जा रही वैदिक भाषा को समझने के लिए अर्थ विज्ञान सम्बन्धी वियम बनाए। इस जरिए यह भी मालूम पड़ गया कि वेदव्यास के समय तक आते-आते वैदिक भाषा विद्वानों के लिए भी दुरूह हो गई थी। तो सवाल है कि यस्क के व्यक्तित्व के बारे में क्या जानकारियाँ हमें मिलती हैं।

कोई खास नहीं मिलती। यस्क शान्तनु के समय हुए थे, इसका संकेत खुद उनके निरुक्त से मिल जाता है, जिसमें उस समय पड़े बारह वर्षीय दुर्भिक्ष को यस्क ने अपनी आँखों के सामने घटे भूतकाल के उदाहरण के रूप में पेश किया है। पर महाभारत युद्ध का उसमें दूर-दूर तक कोई सन्दर्भ नहीं है। महाभारत परवर्ती एक महत्वभरी पुस्तक वृहदार-यण्कोपनिषद में यस्क के गुरु के बारे में कुछ पता चलता है कि उन्हें आसुरायण का समकालीन माना जाता है। इस बारे में बहस चलती रहती है कि यस्क जतुकीर्ति के शिष्य थे या पुत्र। खुद यस्क ने अपने ग्रन्थ में अपने को पारस्कर कहा है, जो उनके रहने के स्थान का संकेत देता है। 'यस्क' उनके पिता का नाम था या गुरु का, जिसके पुत्र या शिष्य होने के कारण वे यस्क कहलाए, इस पर भी बहस चलती रहती है।

यस्क के बारे में इससे अधिक पता नहीं चलता। पर वैदिक समस्याओं के विवेचन के क्रम में यस्क के बारे में एक धारणा यह भी बनी है कि वे भाषाशास्त्री होने के अलावा वैज्ञानिक भी थे। वैश्वानर अग्नि के विवेचन से हमारा परिचय बखूबी हो जाता है। पर यस्क के समय तक वैदिक मन्त्र लिखे जाने क्रमशः बन्द हो ही रहे थे, वेदों के प्रति एक आदरभाव, रहस्यभाव और साथ ही उपेक्षा भाव भी विकसित हो चुका था। शायद इसलिए यस्क ने वेदों के कवियों को रचयिता न मानकर ऋषि कहा है और जानते हैं, ऋषि का अर्थ क्या है? यस्क कहते हैं- 'ऋषिर्दर्शनात्' अर्थात् जिन्होंने मंत्रों को लिखा नहीं, बस दर्शन किए हैं, वे ही ऋषि हैं। एक अकेले यस्क हमें कितनी ही नई बातों से सराबोर कर देते हैं।

(साभार नवभारत टाइम्स)

नैनीताल लोअर मॉलरोड की दरारें चेतावनी

ढुंगशिला की पहाड़ी की जाँच

नैनीताल। सरोवर नगरी की लोअर मॉलरोड की दरारें चेतावनी देती समझ आने लगी हैं। वर्ष 2018 में क्षतिग्रस्त इस रोड को स्थायी रूप से न संवारे जाने और बरसात के बाद इसकी दरारें फिर से उभर चुकी हैं। विभाग सड़क के पास बिजली की लाइन शिफ्ट होने के बाद कार्य शुरू करने की बात कह चुका है।

बताते चलें कि 2018 में लोअर मॉल रोड का लगभग 25 मीटर हिस्सा टूट कर झील में समा गया था। इसके बाद लोनिवि ने झील में बेस बनाकर मशीन से ड्रीलिंग और पाइप डालकर अस्थायी ट्रीटमेंट किया था। इसके बाद मरम्मत के लिये बजट स्वीकृत हुआ लेकिन किसी न किसी कारण से इसका स्थायी ट्रीटमेंट न हो पाया और अब पुनः दरारें दिखाई दे रही हैं।

दूसरी ओर भीमताल के ग्राम पंचायत ढुंगशिला की पहाड़ी से लम्बे समय से लगातार भूस्खलन और पानी के रिसाव कका भू-वैज्ञानिकों, राजस्व विभाग और प्राधिकरण की टीम ने निरीक्षण किया। टीम ने ड्रोन के द्वारा से पहाड़ी में हो रहे भूस्खलन और पानी के रिसाव की वीडियोग्राफी और फोटो लेकर राजस्व विभाग और प्राधिकरण से जानकारी ली। भूस्खलन रोकने के लिए सुरक्षात्मक कार्य करने की बात कही। एसडीएम नवाजिश खलीक ने बताया कि टीम ने पहाड़ी का निरीक्षण कर भूस्खलन को लेकर जाँच की है। टीम की रिपोर्ट के आधार पर भूस्खलन रोकने के लिए सुरक्षात्मक कार्य जल्द किये जायेंगे।

श्रद्धांजलि

प्रताप सिंह बिष्ट

गंगोलीहाट। उत्तराखण्ड क्रान्तिदल के संस्थापक सदस्यों में शामिल हाटकेश्वर, पोखरी निवासी प्रताप सिंह बिष्ट (88) का विगत दिवस निधन हो गया। वह कुछ समय से दिल्ली रहे थे। वहीं उन्होंने अन्तिम सांस ली।

चन्द्रभानु जोशी

नाचनी। प्रदेश कांग्रेस के पूर्व सचिव चन्द्रभानु जोशी (51) का आकस्मिक निधन हो गया। स्वास्थ्य खराब होने पर उन्हें जिला चिकित्सालय के बाद हायर सेंटर रेफर किया गया था, उन्होंने रास्ते में ही दम तोड़ दिया।

दीवान सिंह जड़ौत

अल्मोड़ा। पत्रकार रमेश जड़ौत के पिता दीवान सिंह जड़ौत (75) का निधन हो गया। एमईएस से सेवानिवृत्त जड़ौत लम्बे समय से अस्वस्थ्य चल रहे थे।

दान सिंह कन्याल

डीडीहाट। शिव मन्दिर वार्ड निवासी पूर्व शिक्षक व सामाजिक कार्यकर्ता दान सिंह कन्याल का निधन हो गया। 70 वर्षीय कन्याल जी कुछ समय से अस्वस्थ्य थे।

तारादत्त गुरुरानी

डीडीहाट। सामाजिक सरोकारों से जुड़े शिक्षक तारादत्त गुरुरानी का निधन हो गया। सौ साल की आयु प्राप्त गुरुरानी जी आदर्श शिक्षक के रूप में ख्याति रखते थे।

अविनाश गोयल

रानीखेत। भाजपा के 78 वर्षीय पूर्व नगर अध्यक्ष अविनाश गोयल का विगत दिवस निधन हो गया। गोयल जी सामाजिक कार्यों में हमेशा अग्रणीय रहे थे।

देवीदत्त पन्त

हल्द्वानी। बसन्त विहार मुखानी निवासी रिटायर्ड सूबेदार देवीदत्त पन्त जी का विगत दिवस निधन हो गया। मुखानी स्थित क्रियाशाला स्थापना में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जब परम्परागत क्रियाकर्म के लिये स्थान निर्धारण होना मुश्किल हो रहा था पन्त जी ने बहुत सूझबूझ से वनविभाग की भूमि पर इस प्रकार की व्यवस्था बनवाई जिसका लाभ समाज को हो रहा है। समाज के संरक्षक के रूप में वह हमेशा सद्कर्मों में रहे।

पिघलता हिमालय परिवार इन सभी पुण्य आत्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

Enjoy Beauty of
Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट सम्पर्क
नरेन्द्र सिंह रावत 7351285555

जंगपांगी जनरल स्टोर
मदकोट रोड, दरांती मनुस्यारी
(सीमेन्ट, पेण्ट, हार्डवेयर सामग्री के लिये सुलभ स्थान मो.- 9760342346

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
मो.न.
8958525979,
9411134775
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
फोन सम्पर्क-
05961-222236
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

भारत-चीन सीमा पर

आवश्यकता ही अविष्कार की जननी है लेकिन यहाँ तो आज भी जान हथेली में लेकर आवागमन को मजबूर हैं

श्रीराम सिंह धर्मशक्तू

आवश्यकता ही अविष्कार की जननी है यह कहा जाता है और सत्य भी है लेकिन आजादी के बाद भी उत्तराखण्ड जिन हालातों से गुजर रहा है उससे तो यही कहा जाएगा कि यहाँ तो आज भी हम सब मजबूर हैं। आवश्यकता के बावजूद अविष्कार नहीं हो पा रहे हैं। सीमान्त क्षेत्र भारत तिब्बत चीन सीमा के निकट निवास करने वाली आम जनता एवं सीमा की रक्षा करने वाले देश के रक्षक किन परिस्थितियों का सामना करते हुए देश की सुरक्षा में लगे हैं और सीमान्त गाँव के लोग विभिन्न समस्याओं से जूझ रहे हैं परन्तु सरकार प्रदेश सरकार केन्द्र सरकार को किसी प्रकार की चिन्ता नहीं है।

जब भूखे को अन्न की जरूरत होती है प्यासे को पानी की जरूरत होती है बीमार व्यक्ति को दवाइयां की जरूरत होती है और राह चलने वालों के लिये नदी नालों के ऊपर पुल का निर्माण जरूरी है ताकि किसी प्रकार की दुर्घटना ना हो। रास्ता दुरुस्त हो तो यात्रा करने में आवागमन में किसी तरह की परेशानियां नहीं होती है परन्तु सरकार इसके विपरीत कार्य करती दिखाई देती है। वह कहती है प्रस्ताव बनाकर भेजा है, हो जाएगा, कोशिश कर रहे हैं, चिन्ता मत करो, निश्चिन्त रहो। इस प्रकार के तमाम शब्द वर्षों से चलते आ रहा हैं। जब समय पर लोगों को संसाधन न मिलें या कठिनाइयों का निराकरण न हो तो कैसे मानें कि सरकार कुछ कर रही है। विभागों का भी सब लोग देख ही रहे हैं। 2010 से मोटर सड़क का निर्माण कार्य Dhapa to Meelam बार्डर रोड ऑर्गेनाइजेशन दरकोट पिथौरागढ़ टनकपुर हेड क्वार्टर डायरेक्टर जनरल बार्डर रोड न्यू दिल्ली 1447 बीसीसी वर्तमान में कार्य करने की जिम्मेदारी दी गई है लेकिन यहाँ के हालातों को देखने-जानने के लिये कोई भी उच्च अधिकारी, कोई मंत्री देखने के लिए नहीं आते हैं कि किन परिस्थितियों का सामना करते हुए अपनी जिन्दगी को जान हथेली में रख करके आवागमन मजबूर हैं। लोगों को खतरनाक नदी-नालों को पार करना पड़ता है। खतरों से खेलते हुए लोग अपने गन्तव्य ग्राम की ओर सीमाओं में पहुँच रहे हैं। यह स्थितियां हम सब लोगों के लिए चिन्ता का विषय है जबकि जो निर्माण कार्य में लगे हुए हैं किसी प्रकार की सड़क की देखरेख नहीं कर रहे हैं जिस कारण से मोटर सड़क एक नाले के रूप में परिवर्तित हो चुका है। एक जगह नहीं अनेक स्थानों पर साथ ही Bogddiya Reelkot Biljju Nalla अभी तक पुल का निर्माण नहीं किया गया है। करोड़ों की लागत से जगह-जगह पर मशीन गाड़ियां पुल का सामान जंग लग रही है परन्तु सरकार और विभाग को शायद इस रोड की इन करोड़ों की सम्पत्ति की कोई चिन्ता नहीं है।

इस प्रकार की अनदेखी से सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि सीमान्त क्षेत्र को जोड़ने वाली मोटर सड़क की दशा क्या होगी। विषम भौगोलिक परिस्थितियों का सामना करते हुए उच्च हिमालय सीमा चौकिया में देश की सेवा कर रहे हैं वीरों के साथ यह कब तक चलेगा? यह ऊपर वाला सब कुछ देख रहा है। क्षेत्रवासी भगवान भरोसे जी रहे हैं। हमेशा कठिनाइयों का सामना करने वाले आगे भी क्या यही करते रहेंगे? इन लोगों ने धैर्य और साहस कर्तव्य को निभाने के लिए कभी अपने कदमों को पीछे नहीं रखा है, देश की रक्षा के लिए देश की आजादी के लिए पर्वतारोहण के क्षेत्र में सर्वे आफ इण्डिया के क्षेत्र में, लेखन कार्यों में, सामाजिक कार्यों में हमेशा आगे बढ़ते रहे हैं बढ़ते रहेंगे। हमारे डीएनए में जो है जो लिखा है वह हमेशा अमर रहेगा। उन महान विभूतियां स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के पदचिन्हों पर चलते रहेंगे। हमारे क्षेत्र के 16 स्वतंत्रता संग्राम सेनानी है जिनके बारे में पूरी दुनिया जानती है इसके अतिरिक्त तीन पद्मश्री से सम्मानित व्यक्ति भी हमारे क्षेत्र में है परन्तु विकास के क्षेत्र में सीमांत के गाँव अभी भी कोसों दूर हैं। संचार व्यवस्था, सिंचाई की व्यवस्था, पैदल सड़कों की दयनीय स्थिति नदी नालों के ऊपर पुल का न होना ट्राली का ना होना जिस प्रकार से मिलम गोरी नदी के ऊपर में अभी भी पुल का निर्माण नहीं किया गया है। सीमान्त क्षेत्र में रहने वाले निवासियों के घोड़े खच्चर भेड़ बकरियां किस प्रकार से उच्च हिमालय क्षेत्र से नीचे घाटियों में सुरक्षित होकर के आएंगे इसके बारे में भी सरकार का विभाग का कोई ध्यान नहीं है।

इन हालातों को देख निर्णय लिया है कि सड़क निर्माण एजेंसी जो 14 47 बीसीसी के दरकोट पिथौरागढ़ टनकपुर और मुख्यालय नई दिल्ली बॉर्डर रोड आर्गेनाइजेशन का जो मुख्यालय है और माननीय गृहमंत्री से आग्रह करेंगे की Dhapa to Meelam मोटर सड़क निर्माण कार्य में लगे हुए विभाग को बॉर्डर रोड आर्गेनाइजेशन को यहाँ से शिफ्ट किया जाए और किसी अन्य एजेंसी को निर्माण कार्य हेतु हस्तान्तरित किया जाए तभी इस सड़क का निर्माण कार्य और अधूरी कार्य पूर्ण हो सकेगा।

क्षेत्र के विकास और अपनी सीमा की सुरक्षा के लिये सभी लोगों को मिलकर अपनी एकता को दिखाना चाहिये। सफलता अवश्य मिलेगी। हमारे ग्राम आबाद होंगे।

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
www.mountainheights.in
मो. 9760007148

अतुल कुमार अनूप कुमार अग्रवाल ज्वैलर्स
सदर बाजार
(रानीखेत)

गंगा सिंह धर्मशक्तू
वृजवासी कालोनी
(निकट- जॉब आईटीआइ)
बड़ी मुखानी, हल्द्वानी

Hotel Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

Hayat Paradise
Bus Station Munsiari
Ph. 09411556700, 9997733070

न तेरा न मेरा Thats
APNA GHAR चौकोड़ी
मो.- 9458920379, 6396098804
HOTEL RESTRO BANQUET
YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING
Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।
सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)